



संस्कृति मंत्रालय  
MINISTRY OF  
CULTURE



INTERNATIONAL BUDDHIST CONFEDERATION  
Collective Wisdom United Voice

# ĀṢĀḌHA PŪRṆIMĀ



## Dharma Chakra Pravartan Divas

News Articles Published  
By Indian Electronic Media



scan for website



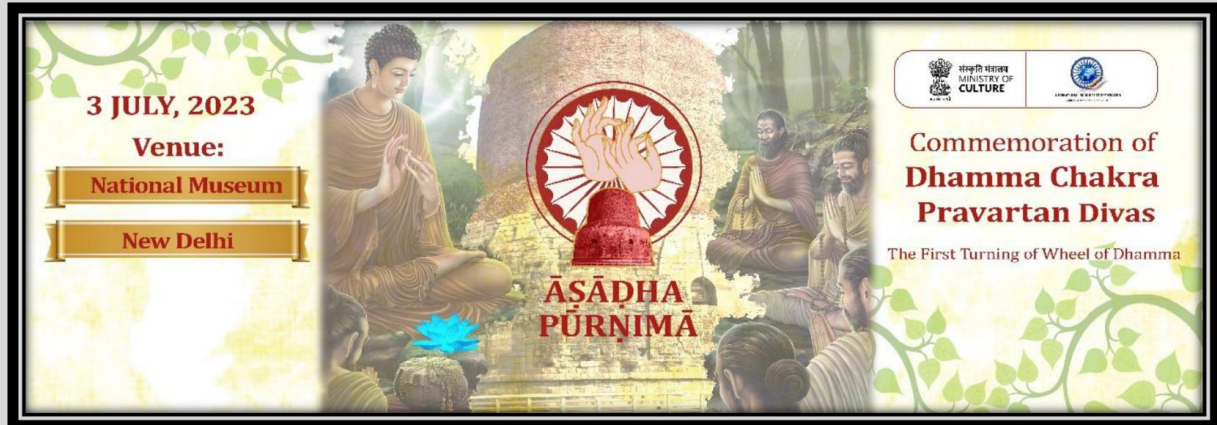
@IbcWorldOrg



ibc.563



ibeworld.org



The International Buddhist Confederation (IBC) under the aegis of Ministry of Culture, Govt. of India organised the Asadha Purnima Dhamma Chakra Pravartan Divas celebration on 03<sup>rd</sup> July 2023 at National Museum.

The Chief Guest at this event was Ms. Meenakashi Lekhi, Minister of State for Culture, Govt. of India. The Guest of honour was His Holiness 12<sup>th</sup> Chamgon Kenting Tai situpa Rinpoche.

On the Occasion of Asadha Purnima, the President of India, Smt. Droupadi Murmu, called upon the youth to draw inspiration from the teachings of Buddha, empowering themselves to make significant contributions toward building a peaceful society, nation, and world.



In a recorded message during the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations on Asadha Purnima, the President highlighted the importance of following Lord Buddha's three teachings: Sheel, Sadhachar, and Pragya. By embracing these teachings, the younger generation can empower themselves and create a positive impact on society.

"On Asadha Purnima, we not only honor the Dhamma of Lord Buddha, which is an integral part of our ancient cultural heritage, but we also recognize its relevance in our daily lives," stated the President. She emphasized the significance of studying and comprehending Lord Buddha's first sermon delivered in the sacred land of Sarnath to gain a deep understanding of Buddha Dhamma.

Addressing the celebrations, the President reflected on how Lord Buddha planted the seeds of the middle path of the Dhamma through his first sermon on Asadha Purnima. On this auspicious day, it is essential for us to internalize the teachings of Lord Buddha and incorporate them into our thoughts and actions.



Smt. Meenakashi Lekhi, Minister of State for Culture and External Affairs, delivered a special address, sharing insights on the journey of a lay person to attain the level of a Bodhisattva. "Although our values connect us, we are individually responsible for our actions. The right actions can shape our destiny," she explained. Minister Lekhi emphasized the importance of leading a simple and sustainable life, guided by consciousness, mindfulness, and right

livelihood, which aligns us with the path of Dhamma.

"Covid-19 has reminded us of the value of life and detached us from material and physical existence. In a way, it has led us toward higher levels of consciousness," she added. The Minister stressed that as time is limited on this planet, every individual should act according to their consciousness, contributing to the strength of the community.

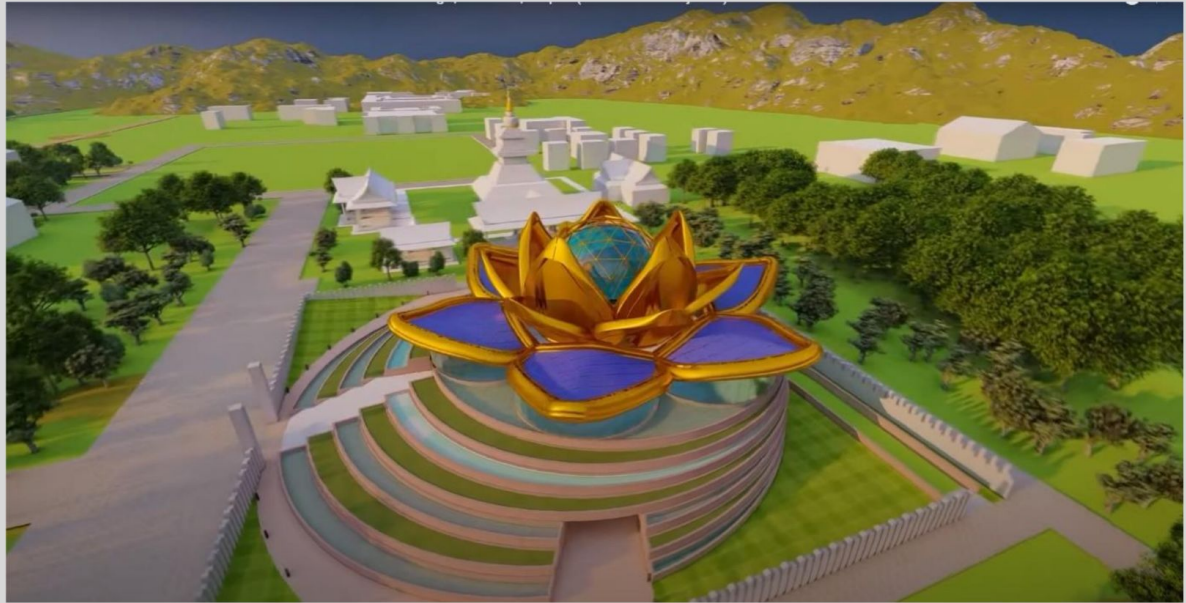
The event was attended by members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi.

During his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima, His Holiness The 12th Chamgon Kenting Tai Situpa said, "We celebrate the first teachings of Buddha, which impart the deepest common sense: to overcome suffering and strive for peace, harmony, and compassion."



On the occasion, a short film on the upcoming project- India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) was shown and the project details explained by the Director General, IBC. Representatives of the companies which are likely to undertake the project were present along with the contractors for the project. Members of the Lumbini Development Trust and Venerable Metteyya Sakyaputta, Vice Chairman of

the Lumbini Development Trust, were present during the ceremony.



It is worth noting that on 25<sup>th</sup> March 2022, an agreement was reached between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC. The 'Shilanyas' ceremony and the foundation stone laying of IICBCH took place on May 16, 2022, with the presence of Prime Minister of India, Shri Narendra Modi, and the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba.

भारत की राष्ट्रपति

श्रीमती द्रौपदी मुर्मु

का

आषाढ पूर्णिमा धर्म चक्र प्रवर्तन दिवस के लिए संदेश

नई दिल्ली, 3 जुलाई, 2023

सर्वप्रथम आप सभी को धर्म चक्र प्रवर्तन दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

1. अंतराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ और केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय को इस पावन आषाढ पूर्णिमा दिवस का आयोजन करने के लिए, मैं बहुत-बहुत बधाई देती हूँ। बुद्ध की शिक्षाओं को प्रकाशित और प्रसारित करने में IBC सराहनीय भूमिका निभा रहा है।
2. हम सब जानते हैं कि भारतीय परंपरा में पूर्णिमा का एक विशेष महत्व होता है। आज पवित्र आषाढ पूर्णिमा का दिन है। लगभग 2600 वर्ष पूर्व, बोधगया में वैशाख पूर्णिमा के दिन ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त भगवान बुद्ध, सारनाथ की पावन भूमि पर पधारे और अपने प्रथम पाँच शिष्यों को धर्मचक्र प्रवर्तन सूत्र का उपदेश दिया।
3. बौद्ध परंपरा के अनुसार आषाढ पूर्णिमा का यह दिन इसलिए भी अत्यंत पवित्र है कि इसी दिन सिद्धार्थ गौतम ने अपनी माता महामाया के गर्भ में प्रवेश किया था।
4. आषाढ पूर्णिमा के दिन हम भगवान बुद्ध के धम्म से परिचित हुए, जो हमारी संस्कृति की निरंतर चली आ रही परंपरा के साथ-साथ हमारे दैनिक जीवन का भाग भी है। इस पवित्र धर्म को जानने के लिए हमें शाक्यमुनि बुद्ध द्वारा सारनाथ में दिये गए प्रथम उपदेश को जानना और समझना चाहिए।

5. आषाढ पूर्णिमा के दिन भगवान बुद्ध ने अपने सर्वप्रथम उपदेश के माध्यम से मध्यम मार्ग को 'धम्म' के बीज रूप में आरोपित किया। इस पवित्र दिन, ऐसे समारोहों के आयोजन का उद्देश्य यही है कि भगवान बुद्ध के उपदेशों को हम अपने आचरण तथा विचार में सम्यक रूप से धारण करें।
6. आज के युवा वर्ग को भगवान बुद्ध के उपदेशों से सीखने की आवश्यकता है। बुद्ध द्वारा बतायी त्रिविध शिक्षा – शील, सदाचार तथा प्रज्ञा का अनुसरण कर, युवा पीढ़ी अपना उत्थान कर सकती है तथा एक शांतिपूर्ण समाज, राष्ट्र और विश्व का निर्माण करने में सहयोग दे सकती है।
7. आइए, आज के धर्म चक्र प्रवर्तन दिवस के पावन अवसर पर हम भगवान बुद्ध के धर्म को अपने मन और कर्म में ढालने का संकल्प लें।  
सबका कल्याण हो।  
भवतु सब्ब मङ्गलम्!

HOME /

BHARAT /

INDIA NEPAL EXCHANGE CONTRACT FOR CONSTRUCTION OF WORLD CLASS BUDDHIST CENTRE IN LUMBINI

## लुंबिनी में विश्व स्तरीय बौद्ध केंद्र के निर्माण के लिए भारत और नेपाल में समझौता

Updated: 9 hours ago

Published: 9 hours ago



'आषाढ़ पूर्णिमा' के शुभ अवसर पर सोमवार को विदेश और संस्कृति राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी की उपस्थिति में, अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) ने एसीसी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड-गोरखा को अनुबंध का प्रमाण पत्र दिया गया।  
पढ़ें पूरी खबर...

नई दिल्ली: 'आषाढ़ पूर्णिमा' के शुभ अवसर पर, विदेश और संस्कृति राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी की उपस्थिति में, अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) ने एसीसी को अनुबंध का प्रमाण पत्र दिया। नेपाल में भगवान बुद्ध की जन्मस्थली लुंबिनी के मठ क्षेत्र में इंडिया इंटरनेशनल सेंटर फॉर बौद्ध कल्चर एंड हेरिटेज (IICBCH) के निर्माण के लिए इंडिया प्राइवेट लिमिटेड-

गोरखा ने एक अनुबंध किया है. यह परियोजना भारत-नेपाल संयुक्त उद्यम कंपनियों की शुरू की गई एक पहल है. जिसका उद्देश्य बौद्ध धर्म के मूल मूल्यों को बढ़ावा देना है.

*Delighted to take part in the Asadha Purnima Dharma Chakra Pravartan Divas celebrations org by [@MinOfCultureGol](#) & International Buddhist Confederation at National Museum today.*

*The day marks Lord Buddha's first sermon after attaining enlightenment in which he gave the Four Noble... [pic.twitter.com/VdyjH8Nnbt](https://pic.twitter.com/VdyjH8Nnbt)  
— Meenakashi Lekhi (@M\_Lekhi) [July 3, 2023](#)*

आषाढ पूर्णिमा के पवित्र अवसर पर संस्कृति मंत्रालय और अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघने 'धम्म चक्र प्रवर्तन दिवस' को उत्साहपूर्वक मनाया. ज्ञान के प्रकाशस्तंभ के रूप में मनाए जाने वाले इस कार्यक्रम पर माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने वीडियो संदेश दिया. बता दें कि कला परियोजना, भारत अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध संस्कृति और विरासत केंद्र (IICBCH), जिसे अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (IBC), नई दिल्ली द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा है, जल्द ही भगवान बुद्ध के जन्मस्थान लुंबिनी के मठ क्षेत्र में शुरू होगी. इस परियोजना के 2024 तक पूरा होने की उम्मीद है.

*आषाढ पूर्णिमा के पवित्र अवसर पर संस्कृति मंत्रालय और [@IbcWorldOrg](#) ने 'धम्म चक्र प्रवर्तन दिवस' को उत्साहपूर्वक मनाया।*

*ज्ञान के प्रकाशस्तंभ के रूप में मनाए जाने वाले इस कार्यक्रम पर माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने वीडियो संदेश दिया।  
[#CultureUnitesAll](#) [#AmritMahotsav](#) [pic.twitter.com/TzUvZkSgF7](https://pic.twitter.com/TzUvZkSgF7)*

*— Ministry of Culture (@MinOfCultureGol) [July 3, 2023](#)*

बता दें कि इससे पहले 25 मार्च, 2022 को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने नेपाल के तत्कालीन प्रधान मंत्री शेर बहादुर देउबा के साथ 'शिलान्यास' समारोह में हिस्सा लिया था. 16 मई, 2022 को साइट पर IICBCH की आधारशिला रखी गई थी. लुम्बिनी में चुना गया यह स्थल न केवल एक तीर्थ स्थल है, बल्कि यूनेस्को विश्व धरोहर परिसर में भी वर्गीकृत है. नया केंद्र एक विश्व स्तरीय सुविधा प्रदान करेगा जो दुनिया भर से तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को प्राप्त करेगा.

**ये भी पढ़ें**

**[भारतीय मार्ग विश्व की प्रगति और मानवता को बचाने का रास्ता है: मीनाक्षी लेखी](#)**

**[RPL certificate: LG वीके सक्सेना ने 1600 प्रशिक्षुओं को RPL प्रमाण पत्र किया वितरित](#)**



## श्रीलंका के प्रतिनिधिमंडल ने बौद्ध विरासत को दर्शाने वाली दो पेंटिंग मीनाक्षी लेखी को सौंपी

वे IICBCH से बौद्ध धर्म के आध्यात्मिक पहलुओं का सार ग्रहण करने में सक्षम होंगे. यह ध्यान देने योग्य है कि यह आधुनिक इमारत ऊर्जा, पानी और अपशिष्ट प्रबंधन के मामले में अनुरूप है. इसमें प्रार्थना कक्ष, एक प्रदर्शनी हॉल, एक कैफेटेरिया और अन्य सुविधाएं भी होंगी.

अगला आर्टिकल  
Loading ...

# ETV Bharat

Assamese Bengali English Gujarati Hindi Kannada Malayalam Marathi Oriya Punjabi Tamil 1

HEADLINES STATE BHARAT INTERNATIONAL SITARA GALLERY VIDEO CRIME CHAMPION BU: 1

HOME /

BHARAT /

INDIA NEPAL EXCHANGE CONTRACT FOR CONSTRUCTION OF WORLD CLASS BUDDHIST CENTRE IN LUMBINI

## India, Nepal exchange contract for construction of world-class Buddhist Centre in Lumbini

Updated: Jul 3, 2023, 9:51 PM

Published: Jul 3, 2023, 9:45 PM



INSTALL APP



CHANGE STATE



SEARCH



MORE

contract was presented by the International Buddhist Confederation (IBC) to ACC India Private Limited-Gorkha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal.

India, Nepal exchange contract for construction of world-class Buddhist Centre in Lumbini

**New Delhi:**On the auspicious occasion of 'Ashadha Purnima' on Monday, in the presence of Minister of State for External Affairs and Culture Meenakshi Lekhi, a certificate of the award of the contract was presented by the International Buddhist Confederation (IBC) to ACC India Private Limited-Gorkha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal. The project is an initiative undertaken by Indo-Nepal joint venture companies.

To promote the core values of the Dhamma as preached by Gautama Buddha and to unravel the mind's true nature through rigorous practice of learning, reflection and meditation and to experience the feeling of oneness with Lord Buddha and peace within, the construction of the state-of-the-art project, the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH), which is being executed by the International Buddhist Confederation (IBC), New Delhi, will begin soon at the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha. The project is expected to be completed by 2024 at the earliest



INSTALL APP



CHANGE STATE



SEARCH



MORE

It may be recalled following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on March 25, 2022, Prime Minister Narendra Modi, along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba, performed the 'shilanyas' ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on May 16, 2022. This chosen site at Lumbini is not only a pilgrimage site, but also categorised within the UNESCO World Heritage Complex. Thus, this special status provides an opportunity to create a sustainable environment through architecture.

The centre has been conceived as a modern architectural marvel with a unique design that symbolises the essence and meaning of the lotus flower, one of Buddhism's most popular symbols of enlightenment and is considered important in Buddhist traditions. The centre will provide a world-class facility that will receive pilgrims and tourists from all over the world. They will be able to absorb the essence of the spiritual aspects of Buddhism from IICBCH. It is worth highlighting that this modern building is compliant in terms of energy, water and waste handling. It will also have prayer halls, an exhibition hall, a cafeteria and other amenities.

---

[About us](#)

[Privacy Policy](#)

[Terms & Conditions](#)

[Contact us](#)



---

Copyright © 2021 Ushodaya Enterprises Pvt. Ltd., All Rights Reserved.



INSTALL APP



CHANGE STATE



SEARCH



MORE

# ANI

- हिंदी खबर (/hindi/khabar/)



*President Murmu on Asadha Purnima. (Photo: PIB)*

## **President Murmu calls upon youths to learn from Buddha's teachings**

ANI | Updated: Jul 04, 2023 02:41 IST

New Delhi [India], July 4 (ANI): President Droupadi Murmu (/topic/president-droupadi-murmu) on Monday called upon the youth to learn from the teaching of the Buddha, to enrich themselves and

immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The President in a recorded message on Asadha Purnima, the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations said that following the three teachings of Lord Buddha- Sheel, Sadhachar and Pragma- the younger generation could empower themselves and bring a positive impact to society, stated a release from Ministry of Culture.

"On Asadha Purnima, we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage but is also an essential feature of our daily life," the President said, adding that to know about Buddha Dhamma we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath.

The President addressing the celebrations, organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture, Government of India, recalled that on Asadha Purnima Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. It is important that on this auspicious day, we absorb the teachings of lord Buddha into our behaviour and thought.

Minister of State for Culture and External Affairs, Meenakashi Lekhi, in her special address described a lay person's journey to attain the level of a Bodhisattva.

"Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny." She went on to explain that living simply and in sustainable manner, in our daily life, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, we are already on the right path of Dhamma.

It was Covid that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added. As we have very little time on this planet, the Minister noted, every individual should do the right thing according to his consciousness which will in return make the community stronger.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event organised at the National Museum in New Delhi.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima said, "We celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realize the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion."

On the auspicious day of Asadha Purnima, in the presence of Minister Meenakashi Lekhi ([/topic/meenakashi-lekhi](#)), the contract was awarded for the construction of India's Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the 'Award of Contract' to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by International Buddhist Confederation (IBC) to M/S ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on 25 March 2022, Prime Minister of India, Shri Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the 'shilanyas' ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on 16 May 2022.

Before the handing over of the Contract Award, a film on the -"India International Centre for Buddhist Culture and Heritage", IBC's- project in Lumbini was shown.

Asadha Purnima day marks Buddha's first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pancavargiya) on the full-moon day of Ashadha at 'Deer Park', Risipatana Mrigadaya in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka- Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Cakra Pravartana Sutra (/topic/dharma-cakra-pravartana-sutra) (Sanskrit) is also known as the Turning of Wheels of Dharma and comprised of the Four Noble Truths and the Noble Eight-Fold Path.

The Rainy Season retreat (Varsha Vassa) for the Monks and Nuns also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation.

The day is also observed as Guru Purnima (/topic/guru-purnima) by both Buddhists (/topic/buddhists) and Hindus (/topic/hindus) as a day to mark reverence to their Gurus. (ANI)



ADVERTISEMENT

# Nepal, India sign MoU for India's International Buddhism Centre in Lumbini

WION Video Team | Updated: Jul 03, 2023, 11:30 PM IST



Prime Minister Narendra Modi's spiritual visit to Nepal Accord spiritual sentiments in his address where he said the Devotion to Lord Buddha binds the two countries as part of one family the construction of Buddhism Center comes after several countries including the United States and China built centers in Lumbini to promote Buddhists philosophy.

ADVERTISEMENT



## Indian Embassy in association with the International Buddhist Confederation celebrates Asadh Purnima in Kathmandu

03-07-2023 | 6:22 pm



### Indian Embassy in association with the International Buddhist Confederation celebrates Asadh Purnima in Kathmandu

The Embassy of India in association with the International Buddhist Confederation celebrated Asadh Purnima in Kathmandu. The event was marked by Minister of Culture of Nepal Sushila Sirpali Thakuri addressing the gathering emphasising on shared Buddhist heritage between India and Nepal. The Secretary of IBC in Nepal mentioned that Buddha's teachings aid in bringing harmony and world peace.

Term & Condition  
STB Dealers

monks from several monasteries across Nepal participated in offering ritualistic prayers.

---

The full Moon day that occurs in the Hindu month Ashadha known as Ashadha Purnima has great significance in the Buddhist and Hindu religions. This is also called Guru Purnima when people seek blessings from their mentors.

Designed, Developed and Hosted by National Informatics Centre (NIC).



Around 2.4 million Buddhist followers of Nepal which is about 8.2 percent of Nepal's population and around 8.5 million Buddhists living in India, about 0.7% of the total population celebrate Asadh Purnima. The day marks Buddha's first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples on the full-moon day of Ashadha in present-day Sarnath, India.

Sweta Singh/Kathmandu/03.07.2023

## Embassy of India celebrates Asadha Purnima

Published On: July 4, 2023 01:45 PM NPT By: [Republica](#)



KATHMANDU, July 3: On the auspicious occasion of Asadha Purnima, the Embassy of India, Kathmandu, in association with the International Buddhist Confederation (IBC) held joint celebrations at the Embassy's Swami Vivekananda Culture Center in Kathmandu on Monday.

According to a statement issued by the embassy, the celebrations were graced by Minister of State for Culture, Civil Aviation & Tourism, Government of Nepal, Sushila Sirpali Thakuri. Representatives from various Buddhist sects and monasteries in Nepal, as well as office-bearers from the Lumbini Development Trust participated in the event. Secretary of International Buddhist Confederation (IBC), Khenpo Chimed represented IBC at the event.

The celebrations witnessed ceremonial prayers by Mahayana Sangha and Theravada Sangha, which was followed by dedication of prayers of four Buddhist Sutras. Minister of State for Culture, Civil Aviation & Tourism Thakuri stated that Buddhism was one of the bonds which have connected India and Nepal for centuries and expressed confidence that the civilization ties between India and Nepal will be strengthened in modern times by the construction of Buddhist as well as other religious circuits.

In the event, video highlights of the design and features of the upcoming India International Center for Buddhist Culture and Heritage in the Lumbini Monastic Zone was displayed at the event.

Moreover, an exhibition showcasing various Buddhist sites of religious importance in Nepal and India was also displayed on the occasion.

India

## Prez calls upon youth to learn from teachings of Buddha to empower themselves

PTI 04 July, 2023 12:00 am IST



Text Size: **A-** **A+**

New Delhi, Jul 3 (PTI) President Droupadi Murmu called upon the youth to learn from the teachings of Lord Buddha to empower themselves and bring a positive impact in society.

A recorded video message of her was screened during an event held at the National Museum here on Monday to mark “Ashadha Purnima”, the second most sacred day for Buddhists.

By following the three teachings of Lord Buddha — Sheel, Sadhachar and Pragya — the younger generation could empower themselves and bring a positive impact in society. President Murmu was quoted as saying in a statement issued by the Culture Minister.

“On ‘Asadha Purnima’, we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage, but it is also an essential feature of

our daily life,” she said, adding that to know about Buddha Dhamma “we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath”.

The President called upon the youth to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The event was organised by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture.

Murmu recalled that on “Asadha Purnima”, Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. “It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of Lord Buddha into our behaviour and thought,” she said.

Minister of State for Culture and External Affairs, Meenakashi Lekhi, in her address described a lay person’s journey to attain the level of Bodhisattva.

“Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny,” she said.

She went on to explain that living simply and in sustainable manner, “in our daily life”, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, “we are already on the right path of Dhamma”.

It was COVID-19 that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent masters, scholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of ‘Asadha Purnima’ said, “We celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realise the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion.” In the presence of Lekhi, contract was awarded for the construction of India’s Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the ‘Award of Contract’ to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by IBC to ACC- Gorakha for

the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal, the statement said.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on March 25, 2022, Prime Minister Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the 'shilanyas' ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on May 16, 2022, it said. Before the handing over of the contract award, a film on the 'India International Centre for Buddhist Culture and Heritage', project in Lumbini was screened.

It was at Sarnath that Buddha gave his first sermon and set the wheel of dharma in motion. The auspicious day of Ashadha Purnima which falls on the full moon day of the month of Ashadha as per Indian lunar calendar is also known as Esala Poya in Sri Lanka and Asanha Bucha in Thailand.

The day marks Buddha's first teaching after attaining Enlightenment, to the first five ascetic disciples (pancavargiya) on the full-moon day of Ashadha at 'Deer Park', in the present day Sarnath, near Varanasi, it said.

The rainy season retreat (Varsha Vassa) for monks and nuns, also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation. The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their gurus, the statement said. PTI KND CK

*This report is auto-generated from PTI news service. ThePrint holds no responsibility for its content.*

*Subscribe to our channels on [YouTube](#) & [Telegram](#)*

---

## Support Our Journalism

India needs fair, non-hyphenated and questioning journalism, packed with on-ground reporting. ThePrint – with exceptional reporters, columnists and editors – is doing just that.

Sustaining this needs support from wonderful readers like you.

Whether you live in India or overseas, you can take a paid subscription by clicking [here](#).

Support Our Journalism →



# Buddha's Teachings can Empower the Youth: President of India, Smt. Droupadi Murmu

## Dharma Chakra Parivartan Divas Celebrations by Culture Ministry and IBC on Ashadha Purnima organised at National Museum, New Delhi

Posted On: 03 JUL 2023 7:59PM by PIB Delhi

Today, the President of India, Smt. Droupadi Murmu, called upon the youth to draw inspiration from the teachings of Buddha, empowering themselves to make significant contributions toward building a peaceful society, nation, and world.

In a recorded message during the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations on Ashadha Purnima, the President highlighted the importance of following Lord Buddha's three teachings: Sheel, Sadhachar, and Pragya. By embracing these teachings, the younger generation can empower themselves and create a positive impact on society.

"On Ashadha Purnima, we not only honor the Dhamma of Lord Buddha, which is an integral part of our ancient cultural heritage, but we also recognize its relevance in our daily lives," stated the President. She emphasized the significance of studying and comprehending Lord Buddha's first sermon delivered in the sacred land of Sarnath to gain a deep understanding of Buddha Dhamma.



Addressing the celebrations organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture, Government of India, the President reflected on how Lord Buddha planted the seeds of the middle path of the Dhamma through his first sermon on Asadha Purnima. On this auspicious day, it is essential for us to internalize the teachings of Lord Buddha and incorporate them into our thoughts and actions.

The official programme was organised at the National Museum , New Delhi today.



Smt. Meenakshi Lekhi, Minister of State for Culture and External Affairs, delivered a special address, sharing insights on the journey of a lay person to attain the level of a Bodhisattva. "Although our values connect us, we are individually responsible for our actions. The right actions can shape our destiny," she explained. Smt. Lekhi emphasized the importance of leading a simple and sustainable life, guided by consciousness, mindfulness, and right livelihood, which aligns us with the path of Dhamma.



"Covid-19 has reminded us of the value of life and detached us from material and physical existence. In a way, it has led us toward higher levels of consciousness," she added. The Minister stressed that as time is limited on this planet, every individual should act according to their consciousness, contributing to the strength of the community.



The event was attended by members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi.

During his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima, His Holiness The 12th Chamgon Kenting Tai Situpa said, "We celebrate the first teachings of Buddha, which impart the deepest common sense: to overcome suffering and strive for peace, harmony, and compassion."

On the auspicious day of Asadha Purnima, in the presence of Smt. Meenakashi Lekhi , an announcement was made regarding the award of the construction contract for the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini. The International Buddhist Confederation (IBC) presented the Certificate of the 'Award of Contract' to M/S ACC-Gorakha, an Indo-Nepal Joint Venture company. Representatives from both Indian and Nepalese companies, as well as members of the Lumbini Development Trust and Venerable Metteyya Sakyaputta, Vice Chairman of the Lumbini Development Trust, were present during the ceremony.

It is worth noting that on 25<sup>th</sup> March 2022, an agreement was reached between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC. The 'shilanyas' ceremony and the foundation stone laying of IICBCH took place on May 16, 2022, with the presence of Prime Minister of India, Shri Narendra Modi, and the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba.

Before the Contract Award ceremony, a film showcasing the "India International Centre for Buddhist Culture and Heritage" project in Lumbini, as envisioned by the IBC, was screened.



Ashadha Purnima marks Buddha's first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pañcavargiya) on the full-moon day of Ashadha at 'Deer Park', Rīṣipātana Mṛigadaya in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka- Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Cakra Pravartana Sutra (Sanskrit) is also known as the Turning of Wheels of Dharma and comprises the Four Noble Truths and the Noble Eight-Fold Path.

The Rainy Season retreat (Varsha Vassa) for the Monks and Nuns also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intense meditation.

The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their Gurus.

\*\*\*

**NB/SKT**

(Release ID: 1937114)

# Buddha's teachings to empower the youth: President Murmu

by News Desk — July 3, 2023

AA



0 SHARES 0 VIEWS

Share on Facebook

t w s e m

The President of India, Smt. Droupadi Murmu today called upon the youth to learn from the teaching of the Buddha, to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

## RELATED POSTS

---

▶ **Govt Calls Off Strategic Sale Of Pawan Hans As Winning Bidder Disqualified**

---

▶ **Election Commission Sets Up Online Portal For Parties To File Financial Statements**

---

▶ **Delhi Police launch probe after report of drone flying over PM Modi's residence**

---

The President in a recorded message on Asadha Purnima, the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations said that following the three-teachings of Lord Buddha- Sheel, Sadhachar and Pragya- the younger generation can empower themselves and bring a positive impact to society.

“On Asadha Purnima we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage but is also an essential feature of our daily life,” the President said, adding that to know about Buddha Dhamma we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath.

The President addressing the celebrations, organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of Ministry of Culture, Government of India, recalled that on Asadha Purnima Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of lord Buddha into our behavior and thought.

Minister of State for Culture and External Affairs, Smt. Meenakashi Lekhi, in her special address described a lay person's journey to attain the level of a Bodhisattva. “Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny.” She went on to explain that living simply and in sustainable manner, in our daily life, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, we are already on the right path of Dhamma.

It was Covid that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added.

As we have very little time on this planet, the Minister noted, every individual should do the right thing according to his consciousness which will in return make the community stronger.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event.

His Holiness The 12th Chamgon Kenting Tai Situpa in his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima he said “we celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense ; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realize the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion.

On the auspicious day of Asadha Purnima, in the presence of Minister Lekhi, the contract was awarded for the construction of India’s Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the ‘Award of Contract’ to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by International Buddhist Confederation (IBC) to M/S ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on 25 March 2022, Prime Minister of India, Shri Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the ‘shilanyas’ ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on 16 May 2022.

Before the handing over of the Contract Award a film on the -“India International Centre for Buddhist Culture and Heritage”, IBC’s- project in Lumbini was shown.

### Background on Asadha Purnima

The day marks Buddha’s first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pañcavargiya) on the full-moon day of Ashadha at ‘Deer Park’, Rīṣipatana Mrigadaya in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka- Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Cakra Pravartana Sutra (Sanskrit) is also known as the Turning of Wheels of Dharma and comprised of the Four Noble Truths and the Noble Eight-Fold Path.

The Rainy Season retreat (Varsha Vassa) for the Monks and Nuns also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation. They are served during this period by the lay community who also observe Uposatha, i.e., to observe eight precepts and meditate under the guidance of their teachers.

The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their Gurus.



Share



Tweet



Send



Share



Share



Send

## By embracing Lord Buddha's teachings, youngsters can empower themselves: President Droupadi Murmu

The youth of the country should draw inspiration from the teachings of Buddha. By this, they can empower themselves to make significant contributions toward building a peaceful society, nation, and world, said President Droupadi Murmu on Tuesday.

In a recorded message during the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations on the occasion of Ashadha Purnima, the President highlighted the importance of following Lord Buddha's teaching.

Stress was given on Buddha's three teachings: Sheel, Sadhachar, and Pragya. By embracing these teachings, the younger generation can empower themselves and create a positive impact on society, the President said.

"On Ashadha Purnima, we not only honor the Dhamma of Lord Buddha, which is an integral part of our ancient cultural heritage, but we also recognize its relevance in our daily lives," stated the President.

The President also emphasised the significance of studying and comprehending Lord Buddha's first sermon delivered in the sacred land of Sarnath to gain a deep understanding of Buddha Dhamma, PIB reported.

Addressing the celebrations organised by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture, Government of India, the President reflected on how Lord Buddha planted the seeds of the middle path of the Dhamma through his first sermon on Asadha Purnima. On this auspicious day, it is essential for us to internalise the teachings of Lord Buddha and incorporate them into our thoughts and actions.





# Teachings of Lord Buddha can help younger generation bring positive impact to society: President Murmu



by News Desk — July 3, 2023 Reading Time: 3 mins read



TGK News Desk

---

## READ ALSO

---

- ▶ **Delhi Police launch probe after report of drone flying over PM Modi's residence**
  - ▶ **NIA Conducts Multi-State Raids In Pak-Operated Ghazwa-E-Hind Radicalized Module Case**
  - ▶ **Govt. Spending ₹6.5 Lakh Crore Annually On Agriculture, Farmers' Welfare: PM Modi**
- 

New Delhi : The President of India, Smt. Droupadi Murmu Tuesday called upon the youth to learn from the teachings of the Buddha, to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The President in a recorded message on Asadha Purnima, the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations said that following the three-teachings of Lord Buddha- Sheel, Sadhachar and Pragma- the younger generation can empower themselves and bring a positive impact to society.

“On Ashadha Purnima we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage but is also an essential feature of our daily life,” the President said, adding that to know about Buddha Dhamma we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath.

The President addressing the celebrations, organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of Ministry of Culture, Government of India, recalled that on Asadha Purnima Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of lord Buddha into our behavior and thought.

Minister of State for Culture and External Affairs, Smt. Meenakashi Lekhi, in her special address described a lay person's journey to attain the level of a Bodhisattva. “Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny.” She went on to explain that living simply and in a sustainable manner, in our daily life, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, we are already on the right path of Dhamma.

It was Covid that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added.

As we have very little time on this planet, the Minister noted, every individual should do the right thing according to his consciousness which will in return make the community stronger.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa in his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima he said “we celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest common sense; suffering is the object that we have to overcome. It is important to experience and realize the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion.

On the auspicious day of Asadha Purnima, in the presence of Minister Lekhi, the contract was awarded for the construction of India’s Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the ‘Award of Contract’ to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by International Buddhist Confederation (IBC) to M/S ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on 25 March 2022, Prime Minister of India, Shri Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the ‘shilanyas’ ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on 16 May 2022.

Before the handing over of the Contract Award a film on the -“India International Centre for Buddhist Culture and Heritage”, IBC’s- project in Lumbini was shown.

### **Background on Ashadha Purnima**

The day marks Buddha’s first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pañcavargiya) on the full-moon day of Ashadha at ‘Deer Park’, Rīṣipatana Mrigadaya in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka- Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Chakra Pravartana Sutra (Sanskrit) is also known as the Turning of Wheels of Dharma and comprises the Four Noble Truths and the Noble Eightfold Path.

The Rainy Season retreat (Varsha Vassa) for the Monks and Nuns also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation. They are served during this period by the lay community who also observe Uposatha, i.e., to observe eight precepts and meditate under the guidance of their teachers.

The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their Gurus.

# THE WEEK

*PTI*

Updated: July 03, 2023 23:25 IST

New Delhi, Jul 3 (PTI) President Droupadi Murmu called upon the youth to learn from the teachings of Lord Buddha to empower themselves and bring a positive impact in society.

A recorded video message of her was screened during an event held at the National Museum here on Monday to mark "Ashadha Purnima", the second most sacred day for Buddhists.

By following the three teachings of Lord Buddha -- Sheel, Sadhachar and Pragya -- the younger generation could empower themselves and bring a positive impact in society, President Murmu was quoted as saying in a statement issued by the Culture Ministry.

"On 'Asadha Purnima', we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage, but it is also an essential feature of our daily life," she said, adding that to know about Buddha Dhamma "we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath".

The President called upon the youth to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The event was organised by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture.

Murmu recalled that on "Asadha Purnima", Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. "It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of Lord Buddha into our behaviour and thought," she said.

Minister of State for Culture and External Affairs, Meenakashi Lekhi, in her address described a lay person's journey to attain the level of Bodhisattva.

"Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny," she said.

She went on to explain that living simply and in sustainable manner, "in our daily life", following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, "we are already on the right path of Dhamma".

It was COVID-19 that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas,

eminent masters, cholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of 'Asadha Purnima' said, "We celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realise the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion."

In the presence of Lekhi, contract was awarded for the construction of India's Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the 'Award of Contract' to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by IBC to ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal, the statement said.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on March 25, 2022, Prime Minister Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the 'shilanyas' ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on May 16, 2022, it said

Before the handing over of the contract award, a film on the 'India International Centre for Buddhist Culture and Heritage', project in Lumbini was screened.

It was at Sarnath that Buddha gave his first sermon and set the wheel of dharma in motion. The auspicious day of Ashadha Purnima which falls on the full moon day of the month of Ashadha as per Indian lunar calendar is also known as Esala Poya in Sri Lanka and Asanha Bucha in Thailand.

The day marks Buddha's first teaching after attaining Enlightenment, to the first five ascetic disciples (pancavargiya) on the full-moon day of Ashadha at 'Deer Park', in the present day Sarnath, near Varanasi, it said.

The rainy season retreat (Varsha Vassa) for monks and nuns, also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation. The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their gurus, the statement said.

*(This story has not been edited by THE WEEK and is auto-generated from PTI)*

## ALSO READ



Madhya Pradesh: Tribal man questioned in tiger beheading case kills self  
(<https://www.theweek.in/news/india/2023/07/03/madhya-pradesh-tribal-man-questioned-in-tiger-beheading-case-kills-self.html>)



Muzumdar set to become Indian women's cricket team head coach  
(<https://www.theweek.in/news/sports/2023/07/03/muzumdar-set-to-become-indian-womens-cricket-team-head-coach.html>)



Udhayanidhi Stalin gifts luxury car to Mari Selvaraj as 'Maamannan' mints Rs 25 crore  
(<https://www.theweek.in/news/entertainment/2023/07/03/udhayanidhi-stalin-gifts-luxury-car-to-mari-selvaraj-as-maamannan-minst-rs-25-crore.html>)

# President Murmu calls upon youths to learn from Buddha's teachings

[admin](#) July 4, 2023

NEW DELHI: President Droupadi Murmu on Monday called upon the youth to learn from the teaching of the Buddha, to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The President in a recorded message on Asadha Purnima, the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations said that following the three teachings of Lord Buddha- Sheel, Sadhachar and Pragya- the younger generation could empower themselves and bring a positive impact to society, stated a release from Ministry of Culture.

"On Asadha Purnima, we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage but is also an essential feature of our daily life," the President said, adding that to know about Buddha Dhamma we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath.

The President addressing the celebrations, organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture, Government of India, recalled that on Asadha Purnima Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. It is important that on this auspicious day, we absorb the teachings of lord Buddha into our behaviour and thought.

Minister of State for Culture and External Affairs, Meenakashi Lekhi, in her special address described a lay person's journey to attain the level of a Bodhisattva.

"Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny." She went on to explain that living simply and in sustainable manner, in our daily life, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, we are already on the right path of Dhamma.

It was Covid that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added. As we have very little time on this planet, the Minister noted, every individual should do the right thing according to his consciousness which will in return make the community stronger.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event organised at the National Museum in New Delhi.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima said, "We celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realize the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion."

On the auspicious day of Asadha Purnima, in the presence of Minister Meenakashi Lekhi, the contract was awarded for the construction of India's Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the 'Award of Contract' to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by International Buddhist Confederation (IBC) to M/S ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on 25 March 2022, Prime Minister of India, Shri Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the 'shilanyas' ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on 16 May 2022.

Before the handing over of the Contract Award, a film on the -"India International Centre for Buddhist Culture and Heritage", IBC's- project in Lumbini was shown.

Asadha Purnima day marks Buddha's first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pancavargiya) on the full-moon day of Ashadha at 'Deer Park', Risipatana Mrigadaya in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka- Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Cakra Pravartana Sutra (Sanskrit) is also known as the Turning of Wheels of Dharma and comprised of the Four Noble Truths and the Noble Eight-Fold Path.

The Rainy Season retreat (Varsha Vassa) for the Monks and Nuns also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation.

The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their Gurus. (ANI)

[Home](#) > [National](#) > President Murmu calls upon youths to learn from teaching of Buddha

## President Murmu calls upon youths to learn from teaching of Buddha

by Hemanta Pande

New Delhi | Mon, Jul 03 | 11:14 p.m.

Share story



**New Delhi, July 3:** President Droupadi Murmu today called upon the youths to learn from the teaching of the Buddha, to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The President in a recorded message on Asadha Purnima, the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations said that following the three-teachings of Lord Buddha- Sheel, Sadhachar and Pragya- the younger generation could empower themselves and bring a positive impact to society.

“On Asadha Purnima we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage but is also an essential feature of our daily life,” the President said, adding that to know about Buddha Dhamma we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath.

The President addressing the celebrations, organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of Ministry of Culture, Government of India, recalled that on Asadha Purnima Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of lord Buddha into our behavior and thought.

Asadha Purnima day marks Buddha's first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pañcavargiya) on the full-moon day of Ashadha at 'Deer Park', Rīṣipātana Mrigadaya in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka- Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Cakra Pravartana Sutra (Sanskrit) is also known as the Turning of Wheels of Dharma and comprised of the Four Noble Truths and the Noble Eight-Fold Path.

The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their Gurus.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of



Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based participated in the event.







#

# Prez calls upon youth to learn from teachings of Buddha to empower themselves

PTI (/pti-stories) | New Delhi | Updated: 03-07-2023 23:20 IST | Created: 03-07-2023 23:20 IST



Country: India

SHARE     ([https://www.youtube.com/channel/UC28dlbVXA88OyB83dM8BEYg?sub\\_confirmation=1](https://www.youtube.com/channel/UC28dlbVXA88OyB83dM8BEYg?sub_confirmation=1))

**P**resident Droupadi Murmu called upon the youth to learn from the teachings of Lord Buddha to empower themselves and bring a positive impact in society.

A recorded video message of her was screened during an event held at the National Museum here on Monday to mark "Ashadha Purnima", the second most sacred day for Buddhists.

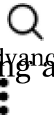
By following the three teachings of Lord Buddha -- Sheel, Sadhachar and Pragya -- the younger generation could empower themselves and bring a positive impact in society, President Murmu was quoted as saying in a statement issued by the Culture Ministry.

"On 'Asadha Purnima', we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage, but it is also an essential feature of our daily life," she said, adding that to know about Buddha Dhamma "we should learn and understand the first sermon given by

Shakyamuni on the sacred land of Sarnath".



The President called upon the youth to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.



The event was organised by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture.

Murmu recalled that on URBAN DEVELOPMENT (/NEWS/URBAN-DEVELOPMENT) WASH (/NEWS/WASH) hermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. "It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of Lord Buddha into our behaviour and thought," she said.

Minister of State for Culture and External Affairs, Meenakashi Lekhi, in her address described a lay person's journey to attain the level of Bodhisattva.

"Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny," she said.

She went on to explain that living simply and in sustainable manner, "in our daily life", following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, "we are already on the right path of Dhamma".

It was COVID-19 that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added.


Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent masters, cholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of 'Asadha Purnima' said, "We celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realise the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion." In the presence of Lekhi, contract was awarded for the construction of India's Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the 'Award of Contract' to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by IBC to ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal, the statement said.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on March 25, 2022, Prime Minister Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the 'shilanyas' ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at

the site on May 16, 2022, it said Before the handing over of the contract award, a film on the 'India International Centre for Buddhist Culture and Heritage', project in Lumbini was screened.



 (/Home/AdvancedSearch)

It was at Sarnath that Buddha gave his first sermon and set the wheel of dharma in motion. The auspicious day of Ashadha Purnima which falls on the full moon day of the month of Ashadha as per Indian lunar calendar is also known as Esala Poya in Sri Lanka and Asanha Bucha in Thailand. The day marks Buddha's first sermon to five ascetic disciples (pancavargiya) on the full-moon day of Ashadha at 'Deer Park', in the present day Sarnath, near Varanasi, it said.

The rainy season retreat (Varsha Vassa) for monks and nuns, also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation. The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their gurus, the statement said.

(This story has not been edited by Devdiscourse staff and is auto-generated from a syndicated feed.)

READ MORE ON: [Dhamma \(/news?tag=Dhamma\)](/news?tag=Dhamma) [Droupadi Murmu \(/news?tag=Droupadi+Murmu\)](/news?tag=Droupadi+Murmu)

[Varanasi \(/news?tag=Varanasi\)](/news?tag=Varanasi) [Sarnath \(/news?tag=Sarnath\)](/news?tag=Sarnath) [Hindus \(/news?tag=Hindus\)](/news?tag=Hindus)

[Lord Buddha -- Sheel \(/news?tag=Lord+Buddha+--+Sheel\)](/news?tag=Lord+Buddha+--+Sheel) [Sri Lanka \(/news?tag=Sri+Lanka\)](/news?tag=Sri+Lanka)

[Lord Buddha \(/news?tag=Lord+Buddha\)](/news?tag=Lord+Buddha) [Lumbini \(/news?tag=Lumbini\)](/news?tag=Lumbini) [Heritage \(/news?tag=Heritage\)](/news?tag=Heritage)

[COVID-19 \(/news?tag=COVID-19\)](/news?tag=COVID-19) [Lekhi \(/news?tag=Lekhi\)](/news?tag=Lekhi) [Indian \(/news?tag=Indian\)](/news?tag=Indian)

[Asadha Purnima" \(/news?tag=Asadha+Purnima%27%27\)](/news?tag=Asadha+Purnima%27%27) [Buddha \(/news?tag=Buddha\)](/news?tag=Buddha)

[Nepal \(/news?tag=Nepal\)](/news?tag=Nepal) [Esala Poya \(/news?tag=Esala+Poya\)](/news?tag=Esala+Poya)

[Meenakashi Lekhi \(/news?tag=Meenakashi+Lekhi\)](/news?tag=Meenakashi+Lekhi) [Murmu \(/news?tag=Murmu\)](/news?tag=Murmu)

[Chamgon Kenting Tai Situpa \(/news?tag=Chamgon+Kenting+Tai+Situpa\)](/news?tag=Chamgon+Kenting+Tai+Situpa)

 POST / READ COMMENTS

## Prez calls upon youth to learn from teachings of Buddha to empower themselves

*By following the three teachings of Lord Buddha — Sheel, Sadhachar and Pragya — the younger generation could empower themselves and bring a positive impact in society, President Draupadi Murmu said at an event in New Delhi*

by **Press Trust of India**  
July 4, 2023



President Droupadi Murmu addresses virtually on the occasion of Ashadha Purnima held at the National Museum, New Delhi

**New Delhi:** **President** Droupadi Murmu called upon the youth to learn from the teachings of Lord Buddha to empower themselves and bring a positive impact in society.

A recorded video message of her was screened during an event held at the **National Museum** here on Monday to mark “Ashadha Purnima”, the second most sacred day for Buddhists.

By following the three teachings of Lord Buddha — Sheel, Sadhachar and Pragya — the younger generation could empower themselves and bring a positive impact in society, President Murmu was quoted as saying in a statement issued by the **Culture Ministry**.

On the holy occasion the Ashadha Purnima Ministry of Culture and **@IbcWorldOrg** celebrated the Dhamma Chakra Pravartan Divas which commemorates the first turning of the wheel of Dhamma. (1/4)**#CultureUnitesAll #AmritMahotsav #G20India pic.twitter.com/kIq4UdvHUH**

— Ministry of Culture (@MinOfCultureGoI) **July 3, 2023**

“On ‘Asadha Purnima’, we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage, but it is also an essential feature of our daily life,” she said, adding that to know about Buddha Dhamma “we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath”.

The President called upon the youth to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The event was organised by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture.

Murmu recalled that on “Asadha Purnima”, Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. “It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of Lord Buddha into our behaviour and thought,” she said.

**Minister of State for Culture and External Affairs**, Meenakashi Lekhi, in her address described a lay person’s journey to attain the level of Bodhisattva.

“Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny,” she said.

She went on to explain that living simply and in sustainable manner, “in our daily life”, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, “we are already on the right path of Dhamma”.

It was COVID-19 that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent masters, scholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of ‘Asadha Purnima’ said, “We celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realise the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion.”

In the presence of Lekhi, contract was awarded for the construction of India’s Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the ‘Award of Contract’ to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by IBC to ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal, the statement said.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on March 25, 2022, Prime Minister Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the ‘shilanyas’ ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on May 16, 2022, it said

Before the handing over of the contract award, a film on the ‘India International Centre for Buddhist Culture and Heritage’, project in Lumbini was screened.

It was at Sarnath that Buddha gave his first sermon and set the wheel of dharma in motion. The auspicious day of Ashadha Purnima which falls on the full moon day of the month of Ashadha as per Indian lunar calendar is also known as Esala Poya in Sri Lanka and Asanha Bucha in Thailand.

### **Dear Reader,**

Over the past four years, **EastMojo** revolutionised the coverage of Northeast India through our sharp, impactful, and unbiased coverage. And we are not saying this: you, our readers, say so about us. Thanks to you, we have become Northeast India’s largest, independent, multimedia digital news platform.

Now, we need your help to sustain what you started.

We are fiercely protective of our ‘independent’ status and would like to remain so: it helps us provide quality journalism free from biases and agendas. From travelling to the remotest regions to cover various issues to paying local reporters honest wages to encourage them, we spend our money on where it matters.

Now, we seek your support in remaining truly independent, unbiased, and objective. We want to show the world that it is possible to cover issues that matter to the people without asking for corporate and/or government support. We can do it without them; we cannot do it without you.



शहर  
प्रदेश

Chhattisgarh News

MadhyaPradesh News

Bihar News

UP News

Maharashtra News

Himachal Pradesh News

Haryana News

Punjab News

देश

दुनिया

खेल

वीडियो

बिज़नेस

एंटरटेनमेंट

फोटो गैलरी

फैक्ट चेक न्यूज़



शहर प्रदेश देश दुनिया खेल वीडियो बिज़नेस एंटरटेनमेंट

Careers

लाइव टीवी

सवाल आपका है

फैक्ट चेक न्यूज़

रेडियो सुनो

Home » Country » Youth should learn from Buddha's teachings to empower themselves:  
President Murmu

## खुद को सशक्त बनाने के लिए बुद्ध की शिक्षाओं से सीख लें युवा : राष्ट्रपति मुर्मू

खुद को सशक्त बनाने के लिए बुद्ध की शिक्षाओं से सीख लें युवा : राष्ट्रपति मुर्मू

: Bhasha , July 4, 2023 / 12:20 AM IST



ताजा खबर

- अमेरिकी राजदूत को रूस की जेल में बंद पत्रकार इवान गेश्कोविच से मिलने की अनुमति मिली  
3 mins ago
- रायपुर में फिर चाकूबाजी, पुराने विवाद को लेकर आरोपी ने युवक को उतारा मौत के घाट, इलाके में फैली सनसनी  
10 mins ago
- प्रदेश को बेरोजगारी से मुक्त कराने के लिए सरकार का नया अभियान, अब हर हाथ होगा रोजगार, आज शुभारंभ  
15 mins ago

Close Ad



(फाइल फोटो के साथ)

नयी दिल्ली, तीन जुलाई (भाषा) राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने युवाओं से खुद को सशक्त बनाने और समाज में सकारात्मक प्रभाव लाने के लिए भगवान बुद्ध की शिक्षाओं से सीख लेने का आह्वान किया।

बौद्धों के दूसरे सबसे पवित्र दिन 'आषाढ़ पूर्णिमा' के अवसर पर सोमवार को यहां राष्ट्रीय संग्रहालय में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान मुर्मू का एक रिकॉर्ड किया गया वीडियो संदेश प्रसारित किया गया।

संस्कृति मंत्रालय द्वारा जारी एक बयान में राष्ट्रपति मुर्मू के हवाले से कहा गया है कि भगवान बुद्ध की तीन शिक्षाओं-शील, सदाचार और प्रज्ञा-का पालन करके युवा पीढ़ी खुद को सशक्त बना सकती है और समाज में सकारात्मक प्रभाव ला सकती है।

उन्होंने कहा, "आषाढ़ पूर्णिमा पर हम भगवान बुद्ध के 'धम्म' से परिचित हुए, जो न केवल हमारी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है, बल्कि यह हमारे दैनिक जीवन की एक अनिवार्य विशेषता भी है।"

मुर्मू ने कहा कि बुद्ध के धम्म से वाकिफ होने के लिए "हमें शाक्यमुनि द्वारा सारनाथ की पवित्र भूमि पर दिए गए प्रथम उपदेश को जानना और समझना चाहिए।"

कार्यक्रम का आयोजन संस्कृति मंत्रालय के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) ने किया था।

संस्कृति और विदेश राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी ने अपने संबोधन में एक सामान्य व्यक्ति की बोधिसत्व के स्तर को प्राप्त करने की यात्रा का वर्णन किया।

उन्होंने कहा, "हम सभी अपने मूल्यों से जुड़े हुए हैं, फिर भी हम अपने कार्यों के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं। सही कार्य हमारे भाग्य को बदल सकते हैं।"

राष्ट्रपति ने सोमवार को कर्नाटक के राजभवन में आयोजित एक कार्यक्रम में कमजोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) के सदस्यों, विशेषकर महिलाओं को शिक्षा का महत्व भी समझाया।

● अमेरिका ने सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास पर खालिस्तान समर्थकों के हमले की निंदा की  
21 mins ago

● राजस्थान: अजमेर की पुष्कर झील में नहाते समय डूबने से दो युवकों की मौत  
25 mins ago

## शीर्ष 5 समाचार



रायपुर में फिर चाकूबाजी, पुराने विवाद को लेकर आरोपी ने युवक को उतारा मौत के घाट, इलाके में फैली सनसनी



प्रदेश को बेरोजगारी से मुक्त कराने के लिए सरकार का नया अभियान, अब हर हाथ होगा रोजगार, आज शुभारंभ



शुक्र करने जा रहे गोचर, इन राशियों के जातकों के लिए होगा लकी साबित, इन 3 राशियों को रहना होगा बेहद सावधान



सावन के पहले दिन बड़ा झटका, टमाटर के बाद अब गैस सिलेंडर के दामों में बढ़ोतरी, राजधानी में इतनी हुई कीमत



इस दौरान, उन्होंने विशेष रूप से जेनु कुरुबा और कोरागा समुदायों के पीवीटीजी सदस्यों के साथ बातचीत की और उनसे विभिन्न सरकारी पहलों का लाभ उठाने के लिए भी कहा।

राजभवन द्वारा जारी एक बयान में कहा गया है, “राष्ट्रपति ने पीवीटीजी समुदाय, विशेषकर महिलाओं के लिए शिक्षा के अत्यधिक महत्व पर जोर दिया। उन्होंने समुदाय एवं महिलाओं को आदिवासी महिला सशक्तिकरण योजना सहित विभिन्न पहल का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया।”

मुर्मू ने कर्नाटक में इस समुदाय से डॉक्टरेट की डिग्री हासिल करने वाली पहली महिला से मिलकर खुशी भी व्यक्त की।

भाषा सुरभि पारुल

पारुल



इन 5 राशि के जातकों का सूर्य की तरह चमकेगा भाग्य, धन-लाभ के साथ करियर में भी मिलेगी सफलता

## President Murmu calls upon youths to learn from Buddha's teachings

By ANI | Published: July 04, 2023 2:41 AM

New Delhi [India], July 4 : President Droupadi Murmu on Monday called upon the youth to learn from the ...



Open in App

President Murmu calls upon youths to learn from Buddha's teachings



New Delhi [India], July 4 : President Droupadi Murmu on Monday called upon the youth to learn from the teaching of the Buddha. to enrich themselves and immensely contribute to

[HOME](#) > [NEWS](#) > [INDIA NEWS](#)

## President Murmu calls upon youths to learn from Buddhas teachings

**New Delhi, July 4: President Droupadi Murmu on Monday called upon the youth to learn from the teaching of the Buddha, to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.**



The President in a recorded message on Asadha Purnima, the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations said that following the three teachings of Lord Buddha- Sheel, Sadhachar and Pragma- the younger generation could empower themselves and bring a positive impact to society, stated a release from Ministry of Culture.

"On Asadha Purnima, we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha

given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath.

The President addressing the celebrations, organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of the Ministry of Culture, Government of India, recalled that on Asadha Purnima Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. It is important that on this auspicious day, we absorb the teachings of lord Buddha into our behaviour and thought.

Minister of State for Culture and External Affairs, Meenakashi Lekhi, in her special address described a lay person's journey to attain the level of a Bodhisattva.

"Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny." She went on to explain that living simply and in sustainable manner, in our daily life, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, we are already on the right path of Dhamma.

It was Covid that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added. As we have very little time on this planet, the Minister noted, every individual should do the right thing according to his consciousness which will in return make the community stronger.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event organised at the National Museum in New Delhi.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima said, "We celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realize

On the auspicious day of Asadha Purnima, in the presence of Minister Meenakashi Lekhi, the contract was awarded for the construction of India's Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the 'Award of Contract' to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by International Buddhist Confederation (IBC) to M/S ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on 25 March 2022, Prime Minister of India, Shri Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the 'shilanyas' ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on 16 May 2022.

Before the handing over of the Contract Award, a film on the -"India International Centre for Buddhist Culture and Heritage", IBC's- project in Lumbini was shown.

Asadha Purnima day marks Buddha's first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pancavargiya) on the full-moon day of Ashadha at 'Deer Park', Risipatana Mrigadaya in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka-Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Cakra Pravartana Sutra (Sanskrit) is also known as the Turning of Wheels of Dharma and comprised of the Four Noble Truths and the Noble Eight-Fold Path.

The Rainy Season retreat (Varsha Vassa) for the Monks and Nuns also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation.

The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their Gurus.

# PRABHASHAKSHI

🏠 | राष्ट्रीय |

## खुद को सशक्त बनाने के लिए बुद्ध की शिक्षाओं से सीख लें युवा : राष्ट्रपति मुर्मू



Creative Common

प्रभासाक्षी न्यूज नेटवर्क | Jul 4 2023 6:37AM

मुर्मू ने कर्नाटक में इस समुदाय से डॉक्टरेट की डिग्री हासिल करने वाली पहली महिला से मिलकर खुशी भी व्यक्त की।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने युवाओं से खुद को सशक्त बनाने और समाज में सकारात्मक प्रभाव लाने के लिए भगवान बुद्ध की शिक्षाओं से सीख लेने का आह्वान किया। बौद्धों के दूसरे सबसे पवित्र दिन 'आषाढ पूर्णिमा' के अवसर पर सोमवार को यहां राष्ट्रीय संग्रहालय में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान मुर्मू का एक रिकॉर्ड किया गया वीडियो संदेश प्रसारित किया गया। संस्कृति मंत्रालय द्वारा जारी एक बयान में राष्ट्रपति मुर्मू के हवाले से कहा गया है कि भगवान बुद्ध की तीन शिक्षाओं-शील, सदाचार और प्रज्ञा-का पालन करके युवा पीढ़ी खुद को सशक्त बना सकती है और समाज में सकारात्मक प्रभाव ला सकती है। उन्होंने कहा, "आषाढ पूर्णिमा पर हम भगवान बुद्ध के 'धम्म' से परिचित हुए, जो न केवल हमारी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है, बल्कि यह हमारे दैनिक जीवन की एक अनिवार्य विशेषता भी है।"

मुर्मू ने कहा कि बुद्ध के धम्म से वाकिफ होने के लिए "हमें शाक्यमुनि द्वारा सारनाथ की पवित्र भूमि पर दिए गए प्रथम उपदेश को जानना और समझना चाहिए।" कार्यक्रम का आयोजन संस्कृति मंत्रालय के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) ने किया था। संस्कृति और विदेश राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी ने अपने संबोधन में एक सामान्य व्यक्ति की बोधिसत्व के स्तर को प्राप्त करने की यात्रा का वर्णन किया। उन्होंने कहा, "हम सभी अपने मूल्यों से जुड़े हुए हैं, फिर भी हम अपने कार्यों के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं। सही कार्य हमारे भाग्य को बदल सकते हैं।" राष्ट्रपति ने सोमवार को कर्नाटक के राजभवन में आयोजित एक कार्यक्रम में कमजोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) के सदस्यों, विशेषकर महिलाओं को शिक्षा का महत्व भी समझाया।

इस दौरान, उन्होंने विशेष रूप से जेनु कुरुबा और कोरागा समुदायों के पीवीटीजी सदस्यों के साथ बातचीत की और उनसे विभिन्न सरकारी पहलों का लाभ उठाने के लिए भी कहा। राजभवन द्वारा जारी एक बयान में कहा गया है, "राष्ट्रपति ने पीवीटीजी समुदाय, विशेषकर महिलाओं के लिए शिक्षा के अत्यधिक महत्व पर जोर दिया। उन्होंने समुदाय एवं महिलाओं को आदिवासी महिला सशक्तिकरण योजना सहित विभिन्न पहल का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया।" मुर्मू ने कर्नाटक में इस समुदाय से डॉक्टरेट की डिग्री हासिल करने वाली पहली महिला से मिलकर खुशी भी व्यक्त की।

**Disclaimer:** प्रभासाक्षी ने इस खबर को संपादित नहीं किया है। यह खबर पीटीआई-भाषा की फीड से प्रकाशित की गयी है।

**New Delhi, Jul 03, 2023 :** The President of India, Smt. Droupadi Murmu today called upon the youth to learn from the teaching of the Buddha, to enrich themselves and immensely contribute to building a peaceful society, a nation, and a world.

The President in a recorded message on Asadha Purnima, the Dharma Chakra Pravartana Divas celebrations said that following the three-teachings of Lord Buddha- Sheel, Sadhachar and Pragya- the younger generation could empower themselves and bring a positive impact to society.

"On Asadha Purnima we got acquainted with the Dhamma of Lord Buddha which is not only a part of our ancient cultural heritage but is also an essential feature of our daily life," the President said, adding that to know about Buddha Dhamma we should learn and understand the first sermon given by Shakyamuni on the sacred land of Sarnath.

The President addressing the celebrations, organized by the International Buddhist Confederation (IBC), under the aegis of Ministry of Culture, Government of India, recalled that on Asadha Purnima Lord Buddha through his first sermon planted the seeds of the middle path of the Dhamma. It is important that on this auspicious day we absorb the teachings of Lord Buddha into our behavior and thought.

Minister of State for Culture and External Affairs, Smt. Meenakashi Lekhi, in her special address described a lay person's journey to attain the level of a Bodhisattva. "Though we are all connected in our values, yet we are responsible for our own actions. Right actions can change our destiny." She went on to explain that living simply and in a sustainable manner, in our daily life, following the principles of consciousness and with mindfulness in action, speech, conduct and pursuing the right livelihood, we are already on the right path of Dhamma.

It was Covid that showed us the worth of our life, a sense of detachment to material and physical existence. In a sense, this was the path to attaining higher levels of consciousness, she added. As we have very little time on this planet, the Minister noted, every individual should do the right thing according to his consciousness which will in return make the community stronger.

Members of the diplomatic community, dignitaries, patriarchs of Buddhist Sanghas, eminent Masters, Scholars, monks, and nuns based in New Delhi participated in the event organised at the National Museum in New Delhi today.

His Holiness the 12th Chamgon Kenting Tai Situpa, in his Dhamma talk on the Significance of Asadha Purnima said, "we celebrate the first teachings of the Buddha. He taught us the deepest commonsense ; suffering is the object that we have to overcome it is important to experience and realize the words of Buddha before we overcome suffering and pursue peace, harmony and compassion."

On the auspicious day of Asadha Purnima, in the presence of Minister Smt Meenakashi Lekhi, the contract was awarded for the construction of India's Buddhist Centre in the Monastic Zone of Lumbini. The Certificate of the 'Award of Contract' to an Indo-Nepal Joint Venture company was presented by International Buddhist Confederation (IBC) to M/S ACC- Gorakha for the construction of the India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH) in the Monastic Zone of Lumbini, the birthplace of Lord Buddha in Nepal.

It may be recalled, following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on 25 March 2022 Prime Minister of India, Shri Narendra Modi along with the then Prime Minister of Nepal, Sher Bahadur Deuba performed the 'shilanyas' ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on 16 May 2022.

Before the handing over of the Contract Award, a film on the -"India International Centre for Buddhist Culture and Heritage" IBC's- project in Lumbini was shown.

Asadha Purnima day marks Buddha's first teaching after attaining Enlightenment to the first five ascetic disciples (pañcavargiya) on the full-moon day of Ashadha at 'Deer Park', Pipatana Mrigadaya in the present day Sarnath, near Varanasi, India. This teaching of Dhamma Cakka- Pavattana Sutta (Pali) or Dharma Chakra Pravartana Sutra (Sanskrit) is also

known as the Turning of Wheels of Dharma and comprised of the Four Noble Truths and the Noble Eight-Fold Path.

The Rainy Season retreat (Varsha Vassa) for the Monks and Nuns also starts with this day lasting for three lunar months from July to October, during which they remain in a single place, generally in their temples dedicated to intensive meditation.

The day is also observed as Guru Purnima by both Buddhists and Hindus as a day to mark reverence to their Gurus.





## INDIA INTERNATIONAL CENTRE FOR BUDDHIST CULTURE AND HERITAGE (IICBCH) LUMBINI, NEPAL



Scan the QR code on IICBCH

### IICBCH, Lumbini

To promote the core values of the Dhamma as preached by Gautama Buddha and in order to unravel the mind's true nature through rigorous practice of learning, reflection, meditation and to experience the feeling of oneness with Lord Buddha and peace within, the construction of a state-of-the-art project, the 'India International Centre for Buddhist Culture and Heritage (IICBCH)', being implemented by International Buddhist Confederation (IBC) New Delhi, will begin shortly at the Monastic Zone of Lumbini, the birth place of Lord Buddha.



Hon'ble Prime Minister of India, Shri Narendra Modi along with the then Hon'ble Prime Minister of Nepal, Shri Sher Bahadur Deuba unveil the foundation stone of IICBCH

This chosen site at Lumbini is not only a pilgrimage site but is categorised within the UNESCO World Heritage complex. Thus, this special status provides an opportunity to create sustainable environment through architecture. The centre has been conceived as a modern architectural marvel with a unique design that symbolises the essence and meaning of the lotus flower – one of Buddhism's most popular symbols of enlightenment and is considered important in the Buddhist traditions.

Following an agreement between the Lumbini Development Trust (LDT) and the IBC, on 25 March 2022, Hon'ble Prime Minister of India, Shri Narendra Modi along with the then Hon'ble Prime Minister of Nepal, Shri Bahadur Deuba performed the 'shilanyas' ceremony and laid the foundation stone of IICBCH at the site on 16 May 2022.

After a series of mandatory administrative procedures associated with tendering of the project and subsequent coordination between IBC, the Ministry of Culture, Government of India, Kathmandu with relevant organisations/institutions in Nepal, the contract for the project has been awarded to an India-Nepal (JV) company – M/s ACC-Gorakha (JV). The project is expected to be completed by 2024 at the earliest in case it is undertaken unhindered by various factors.



### Background to the Architecture

The design of the IICBCH is characterised by the presence of a beautiful golden lotus atop which appears majestic from all sides and stands out as a symbol of attainment of complete enlightenment.

The design and the architecture of the building is inspired by the story of the birth of Lord Buddha on this holy land. Siddhartha Gautama was born in Lumbini garden when his mother Mayadevi was on her way from Kapilavastu to her maternal home in Devadaha. Immediately after the birth, Siddhartha Gautama took seven steps to the north and at each step a lotus flower bloomed symbolizing the idea of this regal three storied structure with seven layers of alternate blue water bodies and green landscaped stairways to reach the main level of the building.

The use of solar energy to provide clean energy, and other active elements which convert the building mass to efficient energy bank will help to keep the building cool with radiant cooling. The sustainable building structure would reduce carbon footprint and contribute less amount of greenhouse to the atmosphere during its overall operations. This architectural marvel will be committed to Nepal's goal of Net Zero Green House Emission by 2045 and is inspired by Buddhism's emphasis on ecological mindfulness and the interdependence of all forms of life.



The facility would have a meditation centre which would be the main activity area as well as the core of the facility. There are arrangements for a library and an interpretation centre besides a board room, and guest rooms.

The centre will provide a world-class facility that will receive pilgrims and tourists from all over the world. They will be able to absorb the essence of the spiritual aspects of Buddhism from IICBCH. It is worth highlighting that this modern building is compliant in terms of energy, water and waste handling. It will also have prayer halls, exhibition hall, cafeteria and other amenities.



INTERNATIONAL BUDDHIST CONFEDERATION  
Collective Wisdom United Voice

The International Buddhist Confederation (IBC) is a Buddhist umbrella body that serves as a common platform for Buddhists worldwide. It currently has a membership comprising more than 300 organisations, both monastic and lay, in 39 countries.

Headquartered in New Delhi, the IBC is the outcome of the historic Global Buddhist Congress held in November 2011 in New Delhi, where 900 delegates from all over the world, representing the entire Buddhist world, resolved to form an umbrella Buddhist world body based in India, the land of Buddha's enlightened awakening and origins of Buddha Dhamma. The leadership of the IBC comprises the supreme religious Buddhist hierarchy of all traditions and countries as Patrons and members of our Supreme Dhamma Council.

As per its motto, "Collective Wisdom, United Voice", the IBC provides a common platform to all followers of the Buddha Dhamma worldwide to address issues that are of both Buddhist and global concerns.

#### Mission

To gather the collective wisdom of Buddhists around the world to speak with a united Buddhist voice; to make Buddhist values part of global engagement while working to preserve and promote Buddhist heritage, traditions and practices.

Room No: 331A, Vigyan Bhawan Annexe, Maulana Azad Road, New Delhi - 110011  
Correspondence Address: A1 Wing 5th Floor, Indira Gandhi National Center for Arts Building, Janpath, New Delhi - 110002  
+91-11-23446519, +91-11-23446520  
secretariat@ibcworld.org www.ibcworld.org